Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 02, August, 2024 Special Issue
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

हिमाचल प्रदेश के लोक वादकों की वर्तमान स्थिति

DR. ASHISH CHAUHAN
Department of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

सार संक्षेपिका

लोक संगीत चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, लेकिन उसका विकास और संरक्षण सदैव लोक कलाकारों द्वारा ही संभव हो पाया है। यहाँ के लोक संगीत की जब भी बात होती है, तो स्मरण पटल पर नगाड़ा, ढोल, शहनाई, रणसिंगा, करनाल आदि वाद्यों का वादन करते हुए लोक वादक नज़र आते हैं। यहां लोक वादक देखने में बहुत ही साधारण और भोले-भाले होते हैं, लेकिन इनके द्वारा किया गया वादन अद्भुत होता है। इस वादन पर देवी-देवता भी झूम उठते हैं। हिमाचल प्रदेश के लोक वादकों का वादन पीढ़ी दर पीढ़ी अनेक सदियों से होता हुआ, परंपरा द्वारा हम तक पहुँचा है। यह लोक वादक देवभूमि के आध्यात्मिक क्षेत्र में नहीं अपितु, यहां के जन्म संस्कार, विवाह संस्कार एवं मृत्यु संस्कार तक समस्त संस्कारों को भी पूर्णता प्रदान करते हैं। लोक वादकों को यदि कला साहित्य एवं संस्कृति के प्राण कहा जाए, तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। हिमाचल प्रदेश अपनी लोक कला, संस्कृति, मान्यताओं, उत्सवों-त्योहारों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। पहाड़ी जनजीवन के विभिन्न स्वरूपों में लोक वादन देव पूजा कार्यों से सामाजिक जन्म-विवाह संस्कारों एवं लोकरंजन के क्षेत्र तक तक जाता है। हिमाचल प्रदेश के वादकों ने अपना संपूर्ण जीवन लोक संगीत कला को विकसित एवं सुरक्षित करने हेतु समर्पित किया है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में लोक रंजन को व्यक्त करते ये लोक वादक प्रादेशिक इतिहास एवं गौरव का व्याख्यान करते हुए नज़र आते हैं। प्रदेश में इनके योगदान और महत्व को नज़र अंदाज़ करना मूर्खता है। जनसमाज की बदलती सोच विचारधारा के कारण इन लोक वादकों को वर्तमान में वहाँ सम्मान एवं प्रतिष्ठा नहीं मिली है, जिसके यह असल में हक़दार है। वर्तमान में अधिकतर लोक वादक ग़रीबी रेखा से नीचे है। प्रादेशिक लोक कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने वाले यह कला संरक्षक आज यहां कार्य छोड़ने पर मजबूर हैं। इसके बहुत से कारण सामने आए हैं। इन लोक वादकों के उत्थान एवं सुधार हेतु बहुत से सुधार सुझावों को प्रस्तुत किया गया है। इन सुझावों पर शीघ्रता से कार्यवाही होना अति आवश्यक हैं। प्रदेश की संगीत कला एवं संरक्षको की बेहतर स्थिति के लिए सभी को एकजुट होकर सामने आना होगा। इन लोक वादकों के प्रति सम्मान की दृष्टि से देखना होगा और इन्हें समाज में उठने के लिए अवसर देना होगा। बिना संगीत के सृष्टि की कल्पना करना नीरस समान है, मानो जैसे शरीर बिना प्राण।

उद्देश्य: हिमाचल प्रदेश के प्रमुख लोक वादकों की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना और उससे सम्बन्धित सुझाव वर्णित करना।
अनुसंधान कार्य का क्षेत्र: शोध कार्य का क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के प्रमुख लोक वादकों की वर्तमान स्थिति पर आधारित है।
अनुसंधान प्रविधि:शोध कार्य को अध्ययन विधि एवं साक्षात्कार विधि के अन्तर्गत लिया गया है।
कुंजी शब्द : *1. लोक 2 संगीत वादक 3. वाद्य-यंत्र।*

हिमाचल प्रदेश के लोक वादकों की स्थिति

हिमाचल प्रदेश के लोक वादक पीढ़ी दर पीढ़ी पारम्परिक रूप से लोक संगीत की सेवा और इसे संरक्षण प्रदान करते आए हैं। हिमाचल प्रदेश का सौन्दर्य आज भी ग्रामीण परिवेश में ही झलकता दिखाई देता है। ग्रामीण परिवेश से अधिकतर सम्बन्धित होने वाले यह लोक वादक कृषि एवं अन्य छोटे-मोटे व्यवसाय कर अपना और अपने परिवार का पालन पोषण करते हैं।

वर्तमान में प्रदेश के दैविक कार्य इतने ही लोक वादकों पर आश्रित है, जितना कि मन्दिर के पुजारी पर आश्रित होते हैं। देव भूमि कहलाए जाने वाले प्रदेश में देवी-देवता को ब्रह्म मुहुर्त में जगाने से सुलाने तक प्रतिदिन चार बार देव वादन प्रस्तुत किया जाता है। देव-स्थल में लोक वादक या उनके परिवार में से किसी एक वादक को केवल इसी काम के लिए उपस्थित रहना पड़ता है। पहाड़ी संस्कृति में यह परम्परा सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी लोक वादकों द्वारा निभाई जा रही है। शिमला, सिरमौर, सोलन, कुल्लू, किन्नौर, मण्डी, चम्बा के ग्रामीण परिवेशों में रहने वाले लोक वादकों के साक्षात्कारों एवं जीवन शैली को देखकर ज्ञात हुआ कि, मन्दिर से जुड़ी पूजा, समस्त देव कार्यों, यात्राओं, त्यौहारों में लगने वाले मेलों एवं अन्य समस्त दैविक गतिविधियों में लोक वादक पारम्परिक वाद्यों सहित लोक वृन्द वादन प्रस्तुत करते हैं। यह वृन्द वादन समयानुसार विभिन्न रूपों में किया जाता है।

चम्बा शहर के सुप्रसिद्ध ‘लक्ष्मी नारायण मन्दिर’ में कार्यरत नगारा वादक श्री जरम सिंह कहते हैं, मैं यहां पिछले सात वर्षों से वादन कार्य कर रहा हू। इससे पहले लगभग 20 वर्ष मेरे पिता ने यहां यह कार्य किया है। मुझे यहां 1000 रुपये मासिक वेतन मिलता है। पहले भोग का हिस्सा मिलता था, वो अब नहीं मिलता। राशन भी पहले मिलता था, वो भी अब बंद है। मन्दिर कमेटी की तरफ से एक कमरा रहने के लिए

मिला है, बस। अगर किसी से बात करूं, तो जवाब मिलता है, नहीं यार आपको तो बहुत मिलता है। पता किसी को नहीं है कि क्या मिलता है?''[1]

ज़िला कांगड़ा के सुप्रसिद्ध शक्तिपीठ स्थल 'ज्वाला जी' से सेवानिवृत हुए लोक वादक श्री ओम प्रकाश के अनुसार, जब मन्दिर सरकारी हुआ, तो मुझे शुरू में 500 रुपये मासिक वेतन मिलता था। सन् 1965 से 2015 सरकारी समय तक मैंने मन्दिर में संगीत का कार्य किया है। सेवानिवृत्त होने से पहले 4500 रुपये मासिक वेतन मैंने पाया है। मैंने लगभग 45 वर्ष तक देव कार्यों, सांस्कृतिक कार्यों आदि के माध्यम से यहां सेवाएं दी है। बहुत कुछ दे रही है सरकार। मुझे आज 1000 रुपये पेंशन मिलती है। अब आप हिसाब लगा लो कि इस तरह यह परम्परा कैसे चलेगी? यह तो वैसे भी खत्म हो ही जाएगी।''[2]

प्रदेश के ज़िला सिरमौर से ताल्लुक रखने वाले नगारा, ढोल वादक श्री मस्त राम के अनुसार, देव कार्यों में किसी से कुछ मिला तो ठीक, वरना ज़्यादातर हम अपनी श्रद्धा से ही वादन कार्य करते हैं। हम कृषि करके ही अपने परिवार का पालन पोषण करते हैं।''[3]

ज़िला मण्डी के ढोल वादक श्री परस राम के अनुसार, समाज छुआछूत करता है, हमारे यहां तो बहुत ज्यादा है। इसी कारण से हमारे बच्चे संगीत का काम नहीं करते, वह शर्म करते हैं। जमीने हमारे पास नहीं, कहां से गुजारा करना बड़ा मुश्किल है।''[4]

हमीरपुर के नगारा-शहनाई वादक लेख राज के अनुसार, इस काम में इनकम नहीं है। हमें यह काम मजबूरी में करना पड़ रहा है। कभी शादी-ब्याह का काम आ जाए, तो चले जाते हैं।''[5]

आज भी हिमाचल प्रदेश के लोक वादक परिवार का पालन-पोषण करने के लिए अन्य व्यवसायों पर निर्भर है। फलस्वरूप पारम्परिक लोक वाद्य एवं वादन शैली लुप्त होने की कग़ार पर जा पहुंची है। नई पीढ़ी इन वाद्यों का वादन करने और इसे सीखने की ओर अग्रसर नहीं है। कुछ नए युवा जिनमें संगीत का हुनर है, वह भी गायन-वादन से सम्बन्धित नए विद्युत उपकरणों में ही अपनी रूचि प्रकट कर रहे हैं। इसके पीछे सामाजिक एवं आर्थिक दोनों पक्ष देखने में आते हैं।

हिमाचल प्रदेश के अधिकतर लोक वादक जो व्यवसायिक तौर पर संगीत का कार्य करते हैं, वह पाश्चात्य वाद्यों एवं वादन शैली की ओर अपना रूख कर चुके हैं। समाज में बढ़ते डी.जे. और अन्य विद्युत उपकरणों के कारण समाज के संस्कारों, जन्म, विवाह आदि अवसरों पर पारम्परिक वाद्यों और वादन शैली अब नज़र नहीं आती है, जिसके कारण लोक वादकों की स्थिति दयनीय है। ढोल, नगारा, शहनाई, करनाल, रणसिंगा आदि लोक वाद्यों का स्थान पाश्चात्य वाद्यों ने ले लिया है। आजीविका चलाने वाले संगीत के कलाकार भी अब इन पाश्चात्य वाद्यों का वादन करने पर मजबूर है। लोगों की बदलती सोच और पाश्चात्यकरण के कारण कुछ वर्षों बाद कलाकार वादक तो होंगे, लेकिन प्रादेशिक लोक वाद्य एवं वादन कला लुप्त हो चुकी होगी।

प्रदेश के सुप्रसिद्ध शहनाई वादक श्री सूरजमणि के अनुसार, मन्दिरों एवं देव कार्यों के समस्त कार्यों में वादन करना हमारा खानदानी पेशा है। देव कार्यों के लिए हमें कोई वेतन नहीं मिलता। साल भर में 5-10 बार वादन हेतु मैं देवकार्यों में जाता हूं। जिसमे 2 बार माता की हारण (यात्रा) के समय मैं और मेरे साथी घर-घर जाते हैं। वादन कार्य करने के बाद हमें अनाज दिया जाता है। आज भी इसी अनाज से हम भर पेट

[1] श्री जरम सिंह द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 02-01-2021

[2] श्री ओम प्रकाश द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 10-2020

[3] श्री मस्त राम द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 29-09-2020

[4] श्री परस राम द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 10-2020

[5] श्री लेखराज द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 10/2020

भोजन करते हैं। नव वर्ष में मंगलगान करना, चैत्र मास में महीना गायन को सुनना ग्रामीण एवं शहरी दोनों परिवेश में पहले शुभ समझा जाता था। अब यह विरासतें खत्म हो गई है।''1

प्रदेश के सुप्रसिद्ध ढोल-नगारा वादक श्री विशाल कुमार गन्धर्व के अनुसार, कुछ एक कमियां तो है। संस्कारों में जाना, तो लोगों का व्यवहार अच्छा नहीं होता, जिसके पीछे बहुत से कारण हैं। लेकिन मैं चाहता हूं कि हमारी युवा पीढ़ी इस लोक वादन में काम को सीखे, केवल तभी लोक वाद्य एवं लोक तालें बच सकती हैं।''2

हिमाचल प्रदेश में कला संस्कृति के माध्यम से लोकरंजन व्यापार एवं धार्मिक आस्था को व्यक्त करते कुल्लू दशहरा, मण्डी शिवरात्रि, हमीर उत्सव, ग्रीष्मोत्सव शिमला, रेणुका महोत्सव सिरमौर, शूलिनी मेला सोलन, नलवाड़ मेला बिलासपुर, ऊना, लवी मेला रामपुर आदि समस्त राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाए जाने वाले मेले हैं। इन समस्त मेलों में सांस्कृतिक संध्या आयोजित की जाती है। लेकिन लोक कलाकारों का कहना है कि इन कार्यक्रमों में किसी मंत्री, विधायक, बड़े सरकारी अफसर आदि से जान-पहचान वाले व्यक्ति को ही प्रस्तुति (कार्यक्रम) करने के लिए बुलाया जाता है। हालांकि फलस्वरूप ऑडिशन भी कई स्थानों पर शुरू किए गए हैं। इसके चलते कुछ गायक कलाकारों को योग्यता के आधार पर मौका तो मिल जाता है, लेकिन लोक वादकों की स्थिति में कोई सुधार नज़र नहीं आता है।

हिमाचल प्रदेश के लोक वादकों की वर्तमान स्थिति को निबद्ध करते हुए और भी कई कारण स्पष्ट रूप से देखने में आए हैं। प्रदेश के जनसमाज में जातिवाद अभी भी कायम है। खानपान से रहन-सहन तक की जीवन शैली में अधिकतर लोकवादक जो पिछड़ी जाति और गरीब तबके से है, सामाजिक शोषण के शिकार है। फलस्वरूप लोक वादक वर्ग देव कार्यों, संस्कारिक जन्म, विवाह कार्यों एवं लोकरंजन क्षेत्रों में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष तौर पर अपने साथ होते हुए भेदभाव को महसूस करता है। यही सबसे बड़ा कारण नई युवा पीढ़ी की ओर से सामने आया है, जिसक चलते वह जनमानस में यह कार्य करने में शर्म महसूस करते है। फलस्वरूप खानदानी पेशा छोड़ वह छोटे-मोटे व्यवसाय कर परिवार में अपना योगदान दे रहे हैं। वरिष्ठ वादक वर्ग इतना सम्पन्न नहीं है कि वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा और बड़े कोर्स अच्छे संस्थानों से करवा पाए। हिमाचल प्रदेश के लोक वादकों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, ऐसा पाया गया है।

लोक संगीत से जुड़ी युवा पीढ़ी के अनुसार, वर्तमान में अभी भी हरिजन समाज से ताल्लुक रखने वाले संगीतकार या किसी भी व्यक्ति को किसी ऊंची जाति वाले व्यक्ति के घर में प्रवेश नहीं मिलता है। ग्रामीण परिवेश में आज भी हरिजन को मन्दिरों में जाने की अनुमति नहीं हैं। वह मन्दिर के परिसर या प्रांगण तक ही प्रवेश कर सकते हैं, और ऐसा स्वयं देखने में आया है। ऐसे लोक वादक केवल निश्चित किए गए स्थान पर बैठकर ही वादन कार्य करते हैं। ठीक ऐसा ही प्रदेश के संस्कारिक कार्यों में भी देखा गया है।

अतः हिमाचल प्रदेश के लोक वादकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। साक्षात्कार माध्यम से लोक वादकों से प्रत्यक्ष तौर पर विचारों के माध्यम से इनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को जाना गया है। प्रादेशिक लोक कला एवं संस्कृति के संरक्षक आज स्वयं संरक्षण के मोहताज हो चुके हैं। परिवार के पालन-पोषण का गुज़ारा संगीत कार्य से न होने के कारण कृषि एवं अन्य छोटे-मोटे व्यवसायों पर आधारित है।

यह लोक वादक भोले-भाले सादगी भरे व्यक्तित्व के धनी है। मगर समाज में हो रहे भेदभाव से इनकी कला का पतन होता चला जा रहा है। ऊना, कांगड़ा, हमीरपुर, बिलासपुर, सोलन ज़िलों में पारम्परिक लोक वादकों की संख्या बहुत कम है। अगर ऐसा ही रहा तो 20-25 वर्षों बाद इन क्षेत्रों में लोक वादक और लोक वादन शैली पूर्ण रूप से लुप्त हो चुकी होगी। शिमला, चम्बा, सिरमौर, किन्नौर, मण्डी, कुल्लू में

1 श्री सूरजमणि द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 24-10-2020

2 श्री विशाल कुमार द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 30-09-2020

अभी इस कला का वादन करने वालो की संख्या ठीक है। लेकिन इन लोक वादकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, जिस कारण से लोक कला का पतन होता हुआ भविष्य में देखा जाना स्वभाविक है।

पहाड़ी प्रदेश होने के कारण यहां का जीवन अन्य बाहरी जीवन की तुलना में अधिक कठिन है। ऐसी परिस्थितियों में जहां यातायात, बिजली और शिक्षा आदि सुविधाओं से लोग जुड़ना शुरू हुए हैं, जीवन यापन और परिवार का पालन-पोषण करना सरल नहीं है। यहां के आज भी बहुत से क्षेत्र सड़कों से कटे हुए हैं। जहां सड़के पहुंची है, वह इतनी अव्यवस्थित है कि, वहां पहुंचना बड़ा कठिन है। यातायात परिवहन व्यवस्थित नहीं है। आठवीं से बारहवीं तक के विद्यालयों तक पढ़ने के लिए कई किलोमीटर का सफर तय करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में भारी भरकम वाद्यों को उठाकर कार्यक्रमों में पहुंचना लोक वादकों की असीमित साहस एवं धैर्य को प्रकट करता है। समाज में जातिवाद की दीवारें और शिक्षा का गिरता स्तर लोक वादकों के जीवन में देखने को मिल रहा है। फलस्वरूप लोक वादक बहुत पिछड़े हुए नजर आते हैं।

अतः इन सभी मामलों में सुधार होना अति आवश्यक है। हम केवल सरकार एवं प्रशासन विभागों से ही उम्मीद न रखें, बल्कि सर्व जनसमाज को भी विशाल हृदय और खुली सोच को अपनाना होगा। केवल तभी संभव है कि लोकवादकों की स्थिति को सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित बनाया जा सकता है।

सम्बन्धित सुझाव

हिमाचल प्रदेश के लोक वादकों की वर्तमान स्थिति से सम्बन्धित सुधार सुझाव इस प्रकार है :

- हिमाचल प्रदेश के समस्त देव स्थलों में वादन कार्य करने वाले लोक वादकों की दिहाड़ी को सुनिश्चित किया जाए। कम से कम मनरेगा मजदूर को मिलने वाली दिहाड़ी 200 रुपये के अनुसार मिलने वाली राशि को बढ़ते कार्यकाल के रूप में बढ़त वेतनमान के रूप में रखा जाए।
- सरकारी हो चुके देव स्थलों, मन्दिरों, शक्तिपीठों से सेवानिवृत्त हुए लोक वादकों (कर्मचारी) की पैंशन को सुव्यवस्थित किया जाए और उसे बढ़ाया जाए।
- हिमाचल के सुप्रसिद्ध मेलों में आयोजित सांस्कृतिक संध्याओं में वृन्दवादन (ऑर्केस्ट्रा) के रूप में लोक वादकों के विभिन्न संगठनों एवं पहाड़ी संस्कृति के लोक कलाकारों को अधिक से अधिक प्रस्तुति हेतु अवसर प्राप्त हो।
- सरकार, प्रशासन विभागों द्वारा इन आयोजित मेलों मे सिफ़ारशी अयोग्य कलाकारों की नियुक्ति बंद हो।
- सांस्कृतिक मेलों में बाहरी कलाकारों को बढ़ावा देना बंद किया जाए।
- ग्रामीण परिवेश में जनमानस द्वारा जातिवाद एवं अन्य शोषण की रोकथाम हेतु सरकार उचित कदम उठाए।
- हिमाचल प्रदेश में लोक वादकों की स्थिति का जायज़ा लेकर उचित कदम उठाए जाए, उत्थान हेतु कलाकार संघ की स्थापना की जाए और सम्बन्धित विभागों द्वारा उन्हें कार्यक्रमों द्वारा उचित राशि प्रदान की जाए।
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पाश्चात्य वाद्यों का बहिष्कार किया जाए।
- संगीत विषय के साथ-साथ लोक संगीत विषय को भी पाठन-सामग्री में सम्मिलित किया जाए।
- कला को समर्पित महाविद्यालयों, विद्यालयों की प्रत्येक ज़िला में स्थापना की जाए और उसमें अध्यापकों की नियुक्ति के साथ वादक कलाकारों की भी नियुक्ति की जाए।
- ‘हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत’ विषय के साथ ‘लोक संगीत’ विषय में वादन विषय को भी पहचान मिले।

- शिक्षण संस्थानों में संगीत विषय शुरू किया जाए और लोक संगीत से जुड़े लोक वादकों की नियुक्ति भी इसमें शामिल की जाए।
- सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, भाषा एवं संस्कृति विभाग, सूचना एवं गीत-नाटक विभाग में कलाकारों को नियुक्त किया जाए, जो वर्तमान स्थिति में प्रगति पर नहीं है।
- सरकार द्वारा लोक कला के संरक्षकों एवं विकास के लिए उचित नियम एवं नीतियां लागू की जाए।
- हिमाचल प्रदेश के वरिष्ठ हो चुके लोक वादकों के योगदान को देखते हुए, उन्हें आजीवन पेंशन प्रदान की जाए।
- लोक कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने वाले छात्रों को छात्रवृत्तियां प्रदान की जाए।
- अधिक से अधिक शिक्षण संस्थानों में लोक संगीत कला की कार्यशालाओं को अन्तर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत किया जाए।
- संगीत को समर्पित कार्यशालाओं में लोक वादकों को प्रस्तुति हेतु आमंत्रित किया जाए।
- कला के संरक्षकों का भी दायित्व है, कि वह लोक संगीत वादन शैली को अधिक से अधिक विद्यार्थियों में बांटे।
- लुप्त होने की कग़ार पर आ पहुंची लोक संगीत वादन शैली एवं लोक वादकों पर अधिक से अधिक शोध कार्य किया जाए।
- प्राचीन लोक गीत, लोक तालें, लोक वादन शैली को स्वरलिपिबद्ध कर लेखन कार्य किया जाए।
- प्राचीन लोक वाद्यों को पुर्नसंगठित करके सुव्यवस्थित किया जाना अति आवश्यक है।
- लोककला समर्पित कार्यक्रमों को आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के माध्यम से प्रस्तुत किया जाए।
- आकाशवाणी-दूरदर्शन में लोक वादकों की नियुक्ति की जाए।
- आकाशवाणी-दूरदर्शन के माध्यम से हर क्षेत्र के लोक वादन शैली को प्रस्तुतिकरण हेतु आमंत्रित किया जाए।
- आकाशवाणी-दूरदर्शन में लोक संगीत पर बजने वाले पाश्चात्य वाद्यों का बहिष्कार हो, उनके स्थान पर पारम्परिक वाद्यों को मौका दिया जाए।
- लोक वादकों को एकजुट होकर अपनी समस्याओं को सरकार के समक्ष रखना चाहिए।
- सरकार एवं प्रशासन विभागों को कागज़ी दस्तावेजों पर आश्रित न होकर स्वयं भी साक्षात्कार करके लोक वादकों को रोज़गार के अवसर देने चाहिए।
- उच्च शिक्षण संस्थानों में कार्यरत संगीत विभाग से जुड़े आचार्यों को विषय सम्बन्धित समस्याओं एवं शिक्षण सुधार हेतु योग्य अध्यापकों की मांग करनी चाहिए।
- सरकारी प्रशासन विभागों जैसे सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, गीत एवं नाटक विभाग, भाषा एवं संस्कृति विभाग, दूरदर्शन एवं आकाशवाणी के माध्यम से जनमानस को लोक कला एवं संस्कृति के महत्व से अवगत कराया जाना चाहिए।
- विभिन्न प्रशासन विभागों के माध्यम से समाज में लोक वादकों के महत्व एवं इनके योगदानों को विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा प्रस्तुत कर जनमानस की विचारधारा को बदला जाए।

निष्कर्ष

हिमाचल प्रदेश की ऊंची-ऊंची पर्वत श्रृंखलाएं ऋषि-मुनियों एवं तपस्वियों की तपोभूमि रही है। तपस्वियों के तप की सकारात्मक ऊर्जा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में आज भी देखी जा सकती है। यहां आज भी वैदिक रीति से होने वाली पूजा को देव वाद्यों के साथ होता हुआ देखा जा सकता है। न जाने कितनी सदियों से चला आ रहा देव स्थलों, मठों-मन्दिरों में देव वादन आज भी लोक वादकों द्वारा सुरक्षित है। यहां धार्मिक आस्था एवं विश्वास जनमानस में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है।

हिमाचल प्रदेश अपनी लोक कला, संस्कृति, मान्यताओं, उत्सवों-त्यौहारों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इन समस्त गतिविधियों में संगीत की भूमिका अन्य कलाओं से श्रेष्ठ है। समाज से जुड़ी मान्यताओं चाहे दैविक हों या संस्कारिक रीति-रिवाज़, सदियों से लोक जीवन को वर्णित करती लोक वादन शैली परस्पर जनजीवन से जुड़ी हुई है। इन मान्यताओं के विभिन्न रीति-रिवाज़ों में लोक वादन भी समयानुसार भिन्न-भिन्न रूप लेता है। यह लोक वादन शैली सदियों पुरानी होने के कारण अपनी महत्वता और विशिष्ट शैली को बखूबी व्यक्त करने में सक्षम है। यह वादन शैली वंश परम्परा एवं गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा होती हुई लोक वादकों तक पहुंची है।

हिमाचल प्रदेश के लोक वादकों ने अपना सम्पूर्ण जीवन लोक संगीत कला को विकसित एवं सुरक्षित करने हेतु समर्पित किया है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में लोकरंजन को व्यक्त करते पहाड़ी लोक वादक प्रादेशिक इतिहास एवं गौरव का व्याख्यान करते नज़र आते हैं। प्रदेश में इनके योगदान और महत्व को नज़र अंदाज करना मूर्खता है। जनसमाज की बदलती सोच विचारधारा के कारण इन लोक वादकों को वर्तमान में वह सम्मान एवं प्रतिष्ठा नहीं मिली है, जिसके यह असल में हकदार हैं। वर्तमान में अधिकतर लोक वादक गरीबी रेखा से नीचे है। प्रादेशिक लोक कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने वाले लोक वादक आज यह वादन शैली कार्य छोड़ने पर मजबूर हैं। इसके बहुत से कारण हमारे सामने आए हैं। इन लोक वादकों के उत्थान एवं सुधार हेतु बहुत से सुधार सुझावों को प्रस्तुत किया गया है। इन सुझावों पर शीघ्रता से कार्यवाही होना अति आवश्यक है। प्रदेश की संगीत कला एवं संरक्षक लोक वादकों की बेहतर स्थिति के लिए सभी को एकजुट होकर सामने आना होगा। इन्हें समाज में उठने के लिए अवसर देना होगा। इन लोक वादकों के प्रति सम्मान की दृष्टि से देखना होगा।

बिना संगीत के सृष्टि की कल्पना करना नीरस समान है, मानो शरीर बिना प्राण। हिमाचल प्रदेश के लोक वादकों की महत्ता, भूमिका और योगदान को व्यक्त करना केवल शब्दों द्वारा संभव नहीं है। यह वादक वादन शैली द्वारा इतिहास, परम्पराओं, स्थानीय मनोभावों को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। विभिन्न उपभाषाओं में रचित लोक साहित्य की प्रस्तुति का सरलतम एवं प्रभावशाली तरीका आज भी संगीत ही है। जिस प्रकार प्रकृति हमें सब कुछ प्रदान करती है, ठीक इसी प्रकार समाज से जुड़ी आस्थाओं, मान्यताओं, लोकरंजन, आदि अवसरों को लोक वादक जीवित रखने का बहुत सुन्दर काम करते हैं। यह लोक वादक प्रकृति की ही भान्ति बदले में सम्मान और देखभाल चाहते हैं।

सन्दर्भ

चौहान, आशीष (2022), हिमाचल प्रदेश के लोक वादकों का सांगीतिक योगदान (अप्रकाशित, विद्यावाचस्पति शोध प्रबंध), संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

व्यक्तिगत साक्षात्कार

ज़िला चम्बा, श्री जरम सिंह द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 02-01-2021
ज़िला कांगड़ा, श्री ओम प्रकाश द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 10-2020
ज़िला सिरमौर, श्री मस्त राम द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 29-09-2020
ज़िला मण्डी, श्री परस राम द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 10-2020
ज़िला हमीरपुर, श्री लेखराज द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 10/2020
ज़िला मण्डी, श्री सूरजमणि द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 24-10-2020
ज़िला शिमला, श्री विशाल कुमार द्वारा प्राप्त साक्षात्कार, दिनांक 30-09-2020